19

चेला बनने की बुलाहट

(9:9-17)

यहां विवरण चेला बनने के विषय पर लौट आता है (8:18-22; 9:9-17)। ये भाग यीशु द्वारा किए गए आश्चर्यकर्मों के समूहों के सम्बन्ध के लिए बांटने वालों का काम करते हैं (8:1-17; 8:23-9:8; 9:18-34)। शिष्य बनने के विषय पर इस दूसरे भाग में मत्ती को यीशु की बुलाहट (9:9), पापियों को उसका निमन्त्रण (9:10-13), और उसके चेलों में उपवास का स्थान शामिल है (9:14-17)।

मत्ती को बुलाना (9:9)

[9]वहां से आगे बढ़कर यीशु ने मत्ती नामक एक मनुष्य को महसूल की चौकी पर बैठे देखा, और उससे कहा, ''मेरे पीछे हो ले।'' वह उठकर उसके पीछे हो लिया।

आयत 9. अपनी शिक्षा और आश्चर्यकर्मों के साथ-साथ यीशु अपने चेलों को इकट्ठा करने के काम में भी लगा रहा, जिन्होंने उसके साथ चलना, उससे सीखना और अन्त में उसके सुसमाचार का प्रचार करना था। पिछले अध्याय में लगा था कि यीशु ने अपने पीछे चलने के लिए लगभग तैयार एक ग्रंथी को निराश किया था (8:19, 20) जबकि यहां उसने एक चुंगी लेने वाले को सक्रिय रूप में अपने पीछे चलने को तैयार किया।

मत्ती का बुलाया जाना सुसमाचार के तीनों सहदर्शी वृत्तांतों में मिलता है। इस विवरण के लेखक ने अपने आपको ''मत्ती'' (9:9) और ''महसूल लेने वाला मत्ती'' (10:3) के रूप में बताया। मरकुस और लूका ने उसके बुलाए जाने के सम्बन्ध में वैकल्पिक नाम ''लेवी'' (मरकुस 2:14; लूका 5:27) का इस्तेमाल किया परन्तु बारहों को सूची देते हुए उसे ''मत्ती'' ही लिखा (मरकुस 3:18; लूका 6:15; प्रेरितों 1:13)।

अपने काम के कारण मत्ती को ''आदमी जिसे सब लोग तुच्छ मानते थे'' के रूप में जाना गया है।[1] महसूल लेने वालों को आमतौर पर लोगों की सूची में ''सबसे घृणित'' लोगों में ऊपर लिखा जाता था। उन्हें रोमी अधिवासियों के लिए काम करने वाले होने के कारण अपने लोगों द्वारा गद्दार माना जाता था। इससे भी बढ़कर उन्हें लोगों से अधिक कर वसूल करने वाले चोर समझा जाता था। किसी विशेष इलाके के लिए कर इकट्ठा करने का काम सबसे ऊंची बोली देने वाले (''चुंगी लेने वालों का सरदार''; लूका 19:2) को दिया जाता था और महसूल इकट्ठा करने वाले लोग उसके अधीन काम करते थे, इस कारण भ्रष्टाचार की प्रकृति पाई जाती थी (5:46 पर टिप्पणियां देखें)। थॉमस ई. श्मिट ने इसकी व्याख्या की है:

> चाहे दलाली की प्रणाली नियन्त्रित थी, पर कुछ चीज़ों की कीमत तय करने के लिए निर्धारक की शक्ति बेईमानी को बढ़ावा देती है। चुंगी लेने वालों को यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के निर्देश (लूका 3:12–13) और जकई का क्षतिपूर्ति करने का वचन (लूका 19:8) धोखेबाजी की इस प्रवृत्ति से मेल खाते हैं।[2]

भ्रष्टाचार के कारण कुछ चुंगी लेने वाले स्पष्ट रूप में अत्यधिक धनवान हो गए थे (लूका 19:2)।

इन कारणों से, चुंगी लेने वालों को ''पापियों'' की श्रेणी में रखा जाता था। रब्बियों की परम्परा के अनुसार चुंगी लेने वाले लोग अशुद्ध थे और वे अपनी अशुद्धता को उन्हें छू लेने वाली किसी भी चीज़ को आगे दे देते थे।[3] बेईमानी से कमाया गया उनका धन स्पष्टतया आराधनालय या मन्दिर में कहीं भी स्वीकार नहीं किया जाता था।[4] इसके अलावा उन्हें न्याय करने या अदालत में गवाही देने की अनुमति नहीं होती थी।[5] इस मूल्यांकन के बावजूद कुछ चुंगी लेने वाले आत्मिक मामलों में दिलचस्पी लेने वाले लगते थे (लूका 19:1–10; देखें 18:9–14)। प्रभु के आरम्भिक चेलों में से एक मत्ती इसी तुच्छ माने जाने वाले समूह में से आया था।

चलते हुए रास्ते में **यीशु** की मुलाकात मत्ती से हुई, जो **महसूल की चौकी** (*telōnion*) पर बैठा था। यह ''कस्टम हाउस'' या ''टोल बूथ'' कहलाता था। आर. टी. फ्रांस के अनुसार, ''कफ़रनहूम में *चुंगी कार्यालय* अन्तिपास की चौथाई की सीमा से पार जाने वाली वस्तुओं या दिकापुलिस से झील पार या फिलिप्प की चौथाई से यरदन पार की वस्तुओं पर टोल से सम्बन्धित होगा।''[6] टोल बूथ अधिक यातायात वाले मार्गों पर होते होंगे ताकि मत्ती जैसे अधिकारी आसानी से यात्रियों के कारोबार तक पहुंच सकें।[7] मत्ती कस्टम हाउस के अधिकारियों में से एक था, इसलिए वह व्यापारियों को सफ़र के दौरान रुकने और हर सामान खोलने को कह सकता था।

यीशु ने मत्ती को केवल इतना कहा, **''मेरे पीछे हो ले!''** निश्चय ही उसने यीशु के विषय में सुना हुआ था और शायद उसने उसके आश्चर्यकर्मों और उसे सिखाते हुए देखा भी था। पतरस, अन्द्रियास, याकूब और यूहन्ना की तरह, जो पहले उसके पीछे आए थे (4:18–22), मत्ती **उठकर उसके पीछे हो लिया**। लूका ने कहा है कि ''वह सब कुछ छोड़कर उठा, और उसके पीछे हो लिया'' (लूका 5:28)। सांसारिक खज़ानों की जगह, जो नाश हो जाते हैं (6:19–21) यीशु ने उसे स्वर्ग में खज़ाने देने की पेशकश की। यह एक ऐसी पेशकश थी, जिससे वह इनकार नहीं कर सकता था और न ही उसने इनकार किया। मत्ती ने शक्ति का अपना पद, प्रभाव और सम्पत्ति सब छोड़ दिया और जहां तक वचन हमें बताता है, उसने मुड़कर कभी नहीं देखा। लियोन मौरिस ने उस बड़े विश्वास की बात की है, जो मत्ती का यीशु में था:

> मछुआरे मछली पकड़ने के अपने काम में वापस जा सकते हैं, पर चूंगी लेने वाला महसूल लेने के अपने काम में वापस नहीं जा सकता होगा। जो भी हो, उसकी कमाई वाली जगह जल्द ही भर जानी थी और यदि उसने कोई और नौकरी पाने की कोशिश की, तो किसी पूर्व चुंगी लेने वालों को किसने काम पर रखना था?[8]

यीशु का पापियों को निमन्त्रण (9:10-13)

[10]जब वह घर में भोजन करने के लिए बैठा तो बहुत से महसूल लेने वाले और पापी आकर यीशु और उसके चेलों के साथ खाने बैठे। [11]यह देखकर फरीसियों ने उसके चेलों से कहा, ''तुम्हारा गुरु महसूल लेने वालों और पापियों के साथ क्यों खाता है?'' [12]यह सुनकर यीशु ने उनसे कहा, ''वैद्य भले चंगों के लिए नहीं परन्तु बीमारों के लिए आवश्यक है। [13]इसलिए तुम जाकर इसका अर्थ सीख लो: 'मैं बलिदान नहीं परन्तु दया चाहता हूं।' क्योंकि मैं धर्मियों को नहीं, परन्तु पापियों को बुलाने आया हूं।''

आयत 10. शायद मर्यादा में रहने के कारण, मत्ती ने इस तथ्य को नहीं देखा कि दावत यीशु के सम्मान में उसी के घर में रखी गई थी (मरकुस 2:15; लूका 5:29)। उसने अपने मित्रों और साथियों को बुलाया था, जिनमें सब के सब उसकी तरह सामाजिक और धार्मिक रूप में निकाले हुए थे। **बहुत से महसूल लेने वाले** लोगों के अलावा वहां उपस्थित लोगों को केवल **पापी** (*hamartōloi*) कहा गया है। क्या इस शब्द में वे यहूदी हैं, जो दशमांश देने और औपचारिक शुद्धता जैसी फरीसियों की परम्पराओं को, ईमानदारी से नहीं मानते थे?[9] रब्बियों के साहित्य में ऐसे लोगों को ''देश के लोग'' (*'am ha'arets*) अर्थात साधारण लोग कहा गया है।[10] परन्तु क्रेग एस. कीनर ने तर्क दिया है कि ''यह मानने का कोई कारण नहीं है कि यहां 'पापी' का इतना संकीर्ण अर्थ हो; इस शब्द को अधिकतर व्यवस्था का साफ़ साफ़-उल्लंघन करने वालों के लिए किया गया है।''[11]

धार्मिक लोगों के लिए यीशु का ऐसे लोगों के साथ खाना चौंकाने वाला रहा (लूका 15:1, 2)। इस समय तक किसी दूसरे को भोजन करने के उद्देश्य से मेज़ पर बैठने के लिए निमन्त्रण देने का अर्थ यह हो चला था कि उनमें मित्रता और एकता है।[12] क्योंकि यीशु इस प्रकार की दावतों में भाग लेता था, इस कारण उसे ''पेटू और पियक्कड़ मनुष्य, महसूल लेने वालों और पापियों का मित्र'' कहा जाने लगा था (11:19)। चाहे वह पापियों के साथ समय बिताता था, पर पापियों के यीशु के साथ खाने को उनकी पापपूर्ण गतिविधियों में भागीदारी से नहीं मिलाया जाना चाहिए। पापियों के बीच उपस्थिति से उसे उन्हें अपनी सच्चाई बताने का अवसर मिल जाता था।

आयत 11. फरीसियों ने यीशु की करुणा पर **चेलों** पर निशाना साधते हुए तीखे आरोप के साथ प्रतिक्रिया दी: **''तुम्हारा गुरु महसूल लेने वालों और पापियों के साथ क्यों खाता है?''** उन्होंने किसी अधर्मी व्यक्ति के धर्मी के साथ संगति को लज्जाजनक बात माना (भजन संहिता 1:1; 119:63; नीतिवचन 13:20; 14:7; देखें 1 कुरिन्थियों 15:33)। उनके तिरस्कार का मुख्य कारण चाहे यीशु था, पर वे उसके चेलों की अपने लिए ऐसा गुरु चुनने पर आलोचना करना चाहते थे। सीधे उससे बात करने के भय के कारण, उसके प्रति अपनी भड़ास निकालने के लिए उन्होंने घुमा-फिराकर उस तक पहुंचने का रास्ता चुना हो सकता है।

आयत 12. अपने चेलों पर उनकी टिप्पणी को **सुनकर** यीशु ने इसका उत्तर दिया। उसने कहा, **''वैद्य भले चंगों के लिए नहीं परन्तु बीमारों के लिए आवश्यक है।''** यीशु ने आत्मिक सबक जिसकी आवश्यकता थी, सिखाने के लिए प्रतिदिन के जीवन से एक साधारण उदाहरण का इस्तेमाल किया। तन्दुरुस्त लोग डॉक्टरों को नहीं ढूंढ़ते बल्कि बीमार लोग ही ढूंढ़ते हैं।

यीशु आत्मा का सबसे बड़ा वैद्य यानी डॉक्टर है। जो लोग अपने आपको पूर्ण रूप में आत्मिक समझ वाले मानते थे, जैसे यहां उसकी आलोचना करने वाले फरीसी थे, उन्हें अपनी आत्मिक बीमारी की चंगाई के लिए वैद्य की तलाश नहीं होगी। उन्हें अपना पापपूर्ण होना दिखाई नहीं देता था (15:14; 23:16, 17, 19, 24, 26; यूहन्ना 9:40, 41; 12:40; देखें प्रकाशितवाक्य 3:17, 18)।

यूनानी और रोमी लेखकों ने यीशु द्वारा कही ऐसी ही बातें लिखी हैं। ये बातें कई बार दर्शनिकों द्वारा कही गई बताई जाती हैं, जिनकी समाज की बुराइयों तक पहुंचने के लिए आलोचना की जाती है। इन लोगों ने यह कहते हुए अपना बचाव किया कि ''वैद्य उन लोगों के पास गए हुए हैं, जो बीमार हैं'' और ''वैद्य स्वयं बीमार हुए बिना अपने मरीज़ों की देखभाल में लगे हैं।''[13] वे कहेंगे, ''जिस प्रकार से अच्छा वैद्य वहां जाकर जहां बहुत बीमार हों अपनी सेवा देगा, वैसे ही ... बुद्धिमान व्यक्ति अपना निवास वहां ले जाएगा, जहां मूर्खों की भरमार हो ताकि वह उनकी मूर्खता से निरुत्तर करके उन्हें सुधार सके।''[14] कहा जाता है कि आत्मा के रोग (बुराई) का इलाज बुद्धिमान (दर्शनिकों) लोगों की शिक्षा से हो सकता है।[15] इससे भी अधिक, डांट की कड़ी बातों की तुलना वैद्यों द्वारा दी गई कड़वी दवा से की जाती थी।[16] दूसरों को डांटने वाला वैद्य या दार्शनिक उस डॉक्टर की तरह होता था, जो बीमार व्यक्ति पर क्रोधित हुए बिना बीमारी का इलाज करता था।[17]

आयत 13. जाकर इसका अर्थ सीख लो अभिव्यक्ति उन्हें डांटने का एक तरीका था जो अपने आपको पुराने नियम के धर्मशास्त्र के विद्वान मानते थे (देखें 12:5)। यह अभिव्यक्ति ''अलौकिक ज्ञान का सामना होने पर यहूदी शिक्षकों द्वारा इस्तेमाल किया जाने वाला रब्बियों का प्रसिद्ध फॉर्मूला'' था।[18] ''जाकर सीख लो'' का यह वाक्यांश, रब्बियों की शिक्षा के वाक्यांश के रूप में, यीशु के उत्तर के दूसरे भाग का परिचय है। इसका अर्थ है ''प्रश्न पूछने वालों, जिन्हें व्यवस्था का पता होना चाहिए था, में ज्ञान की कमी'' है।[19]

अपनी बात को और मज़बूत करने के लिए, यीशु ने होशे भविष्यवक्ता से उद्धृत किया। उसने एक वचन चुना, जो इन लोगों को पता होना चाहिए था पर स्पष्टतया उन्हें इसका पता नहीं था: **''मैं बलिदान नहीं परन्तु दया चाहता हूं''** (होशे 6:6)। मसीह द्वारा उद्धृत किए गए इस वचन पाठ के अलग-अलग शब्दों के सम्बन्ध में, जैक पी. लूईस ने समझाया है:

> दिखने में यह उद्धरण सप्तत्ति अनुवाद के बजाय होशे के इब्रानी धर्मशास्त्र से मेल खाता है; परन्तु इब्रानी शब्द *hesed* (दया) सप्तत्ति अनुवाद में *eleos* बन जाता है और इसे तरस या सहानुभूति के रूप में समझा जाता है, यानी वह नियम जिस पर यीशु काम करता था।[20]

फरीसी लोग अपने संस्कारों से सन्तुष्ट थे, पर उनका मन परमेश्वर के साथ सीधा नहीं था। वे बाग की छोटी-सी छोटी सब्जी का दशमांस देते थे पर वे ''दया'' के साथ ''व्यवस्था की गम्भीर बातों'' को नज़रअन्दज़ कर देते थे (23:23)। यहां ''बलिदान'' (*thusia*) का इस्तेमाल जानवरों के वास्तविक बलिदानों के अलावा विभिन्न प्रकार के औपचारिक समारोहों से हो सकता है। न तो होशे और न ही यीशु ने व्यवस्था में बताए गए बलिदानों की उपेक्षा की। जे. डब्ल्यू. मैक्गर्वे ने ध्यान दिलाया है कि यह उद्धरण ''इब्रानी आचरण है इसका अर्थ है 'मैं बलिदान से

दया को प्राथमिकता दूंगा।''[21] यीशु द्वारा इसका इस्तेमाल एक और अवसर पर फरीसियों का सामना किए जाने के समय किया गया था (12:7)।

यीशु ने निष्कर्ष निकाला, ''**क्योंकि मैं धर्मियों को नहीं, परन्तु पापियों को बुलाने आया हूं**।'' यूनानी शब्द (*kaleō*) जिसका अनुवाद ''बुलाने'' हुआ है, ''का अर्थ विवाह के भोज का 'निमन्त्रण' भी हो सकता है (22:1-10)।''[22] पापियों को यह बुलाहट मन-फिराने की थी (लूका 5:32)। संसार में मसीह का मिशन ''खोए हुओं को ढूंढ़ने और उनका उद्धार करने'' का था (लूका 19:10)। वह सब पापियों के लिए अनुग्रहकारी निमन्त्रण दे रहा था; परन्तु अपने आप में धर्मी फरीसियों को नहीं लगता था कि वे पापी हैं, जिस कारण उन्होंने बुलाहट की ओर ध्यान नहीं दिया। ''धर्मियों'' शब्द का इस्तेमाल करके यीशु न तो यह कह रहा था कि कुछ लोग इतने अच्छे हैं कि उन्हें उद्धार की उसकी पेशकश की आवश्यकता नहीं है, न ही उसके कहने का अर्थ यह था कि फरीसी धर्मी लोग थे। उसके कहने का अर्थ केवल इतना था कि वे अपनी ही दृष्टि में धर्मी हैं (देखें लूका 18:9-14)।

शिष्यता और उपवास (9:14-17)

[14]तब यूहन्ना के चेलों ने उसके पास आकर कहा, ''क्या कारण है कि हम और फरीसी इतना उपवास करते हैं, पर तेरे चेले उपवास नहीं करते?'' [15]यीशु ने उनसे कहा, ''क्या बराती, जब तक दूल्हा उनके साथ है, शोक कर सकते हैं? पर वे दिन आएंगे जब दूल्हा उनसे अलग किया जाएगा, उस समय वे उपवास करेंगे। [16]कोरे कपड़े का पैबन्द पुराने वस्त्र पर कोई नहीं लगाता, क्योंकि वह पैबन्द उस वस्त्र से कुछ और खींच लेता है, और वह अधिक फट जाता है। [17]और लोग नया दाखरस पुरानी मश्कों में नहीं भरते हैं, क्योंकि ऐसा करने से मश्कें फट जाती हैं, और दाखरस बह जाता है और मश्कें नष्ट हो जाती हैं; परन्तु नया दाखरस नई मश्कों में भरते हैं और दोनों बचे रहते हैं।''

आयत 14. यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले **के** कुछ **चेलों** द्वारा यीशु से पूछा गया कि क्या कारण है कि वे उपवास क्यों रखते हैं और उसके **चेले** उपवास नहीं **करते**। उनका प्रश्न स्वाभाविक रूप में परिस्थितियों के कारण था कि यीशु और उसके चेले *उपवास* नहीं रखते थे, जबकि यूहन्ना के चेले *उपवास* रख रहे थे। रॉबर्ट एच. माउंस ने ध्यान दिलाया है, ''पिछले पद में प्रश्न यह था कि यीशु को निकाले हुओं के साथ खाना चाहिए या नहीं; अब सवाल यह है कि उसे खाना चाहिए या नहीं!''[23] यूहन्ना के चेले जानना चाहते थे कि चेले बनने के सम्बन्ध में उपवास रखने की क्या भूमिका है। यह तथ्य कि इस समय पर यीशु और उसे चेले उपवास नहीं रखते थे उनकी लहर की बड़ी कमी के रूप में देखा जाता था।

यीशु के विपरीत, यूहन्ना की जीवन शैली तप भरी थी (3:1-4)। दोनों के जीवनों में यह अन्तर उनके सबसे अधिक आलोचकों द्वारा देखा गया था। एक ओर, ''यूहन्ना न खाता या न पीता'' और वे कहते थे कि उसमें ''दुष्टात्मा'' है। दूसरी ओर यीशु ''खाता-पीता आया'' और वे उस पर ''पेटू और पियक्कड़ मनुष्य'' होने का आरोप लगाते थे (11:18, 19)।

इस वचन पाठ में यूहन्ना के चेलों की उपस्थिति इस बात का संकेत है कि उन्होंने यीशु के

प्रति अपनी निष्ठा एक दम से बिल्कुल नहीं बदली। ये दोनों सेवकाइयां एक-दूसरे से मिलती-जुलती थीं, जिसमें यीशु की सेवकाई बढ़ रही थी। मसीह के अग्रदूत के रूप में यूहन्ना ने अपने चेलों का ध्यान यीशु की ओर दिलाया (यूहन्ना 1:29-42)। परन्तु यूहन्ना प्रचार करता और बपतिस्मा देता रहा। यीशु की सेवकाई जल्द ही यूहन्ना की सेवकाई से बढ़ गई: ''यीशु यूहन्ना से अधिक चेले बनाता है, और उन्हें बपतिस्मा देता था'' (यूहन्ना 4:1)। यूहन्ना को बाद में हेरोदेस द्वारा जेल में डाल कर उसका सिर काट दिया गया (4:12; 11:1-15; 14:1-12)।

अपनी सेवकाई के दौरान यूहन्ना ने बेशक अपने चेलों को उपवास रखने और प्रार्थना करने का निर्देश दिया था (लूका 5:33; 11:1)। ऐसा लगता है कि यूहन्ना के चेले और **फरीसी** उपवास रखने पर सहमति में एक-दूसरे से बहुत मिलते जुलते थे। जब वह कहते कि उन्होंने उपवास रखा है तो उनके कहने का अर्थ यह होता था कि वे अक्सर उपवास रखते थे। जैसा पहले कहा गया है, उपवास रखने की एकमात्र आज्ञा प्रायश्चित के दिन मानी जाती थी। (योम किपुर; लैव्यव्यवस्था 16:29-31), परन्तु फरीसियों ने सप्ताह में दो बार उपवास रखने की प्रथा बनाए रखी: सोमवार और गुरुवार। अन्य उपवासों को रब्बियों द्वारा अपनी परम्पराओं के बढ़ने पर मिला दिया गया था (6:16 पर टिप्पणियां देखें)।

दूल्हे (9:15), कपड़े (9:16) और मश्कों (9:17) की विशेषताओं वाले अगले तीन उदाहरण यूहन्ना के चेलों के प्रश्न का उत्तर देने के लिए दिए गए थे। यीशु ने संकेत दिया कि पृथ्वी पर अपने चेलों के साथ उसकी उपस्थिति होने पर उपवास रखने की बात बेमेल थी।

आयत 15. पहले उदाहरण में **यीशु** ने पूछा, **''क्या बराती, जब तक दूल्हा उनके साथ है शोक कर सकते हैं?''** यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने अपने चेलों से पहले अपनी पहचान ''दूल्हे का मित्र'' (''सरवाला''; NLT) के रूप में कराई थी और यीशु को दूल्हा बताया था (यूहन्ना 3:29; देखें 22:2, 3; 25:1; इफिसियों 5:22-33; प्रकाशितवाक्य 19:7; 21:9)। ''दूल्हे के बराती'' वे लोग होते थे, जो दूल्हे के साथ खड़े होते थे और विवाह के समारोह में प्रमुख भूमिका निभाते थे। इस वाक्यांश का अनुवाद कई बार ''विवाह के मेहमान'' के रूप में किया गया है (NRSV)। यीशु के प्रश्न में एक नकारात्मक उत्तर का संकेत है। उपवास रखना, जिसे शोक करने के द्वारा दिखाया जाता था, विवाह के जश्न के आनन्द से मेल नहीं खाता।[24]

यीशु ने संकेत दिया कि उसके चेले बेशक यूहन्ना के चेलों जितना **उपवास** नहीं रखते पर वह समय आने वाला था जब उन्होंने उपवास रखना था। लुईस ने व्याख्या की है, ''यीशु के उनके बीच में होने पर उसके चेले एक अलग परिस्थिति में हैं, जो आनन्द करने की मांग करती थी; परन्तु उसके चले जाने पर, उनका उपवास रखना उपयुक्त होना था। यूहन्ना के जेल में [4:12] या मृत [14:10] होने पर उसके चेले अलग परिस्थिति में थे।''[25]

पुराने नियम में उपवास करने के संदर्भों में से एक प्रमुख संदर्भ शोक करना था, इस कारण यीशु ने उपवास करने की बात उसकी मृत्यु हो जाने के बाद की होगी। जब उसे **उनसे अलग किया** जाना था। यह भाषा यशायाह 53:8 के दुख भोगने की भविष्यवाणी से मेल खाती है: ''अत्याचार करके और दोष लगाकर वे उसे *ले गए*।'' मत्ती रचित सुसमाचार में यह क्रूसारोहण का पहला संकेत है (देखें 16:21; 17:22, 23; 20:18, 19)। यीशु की बात की प्रासंगिकता बेशक सामान्य अर्थ में मसीही लोगों के उपवास करने के हवाले से व्यापक हो सकती है, पर

लगता है कि यहां वह अपने चेलों द्वारा उसकी मृत्यु पर इस विशेष उपवास रखने की बात कर रहा होगा। जब तक यीशु उनके साथ रहता था, जश्न का मौका था; परन्तु उसकी मृत्यु होने पर, कम से कम उसके जी उठने तक, उन्होंने शोक में पड़े रहना था (यूहन्ना 16:16-22)। उपवास रखना उनके शोक का स्वाभाविक परिणाम होना था। यीशु ने जो अन्तर किया, वह वास्तव में ''यीशु के साथ मेज़ की सहभागिता में विवाह जैसे आनन्द और यीशु की मृत्यु पर जनाजे जैसे शोक में अन्तर'' था।[26]

आयतें 16, 17. अन्य दो उदाहरणों में इस नियम पर ज़ोर देना जारी रहता है कि यीशु की उपस्थिति उसके चेलों के होने में उनके उपवास रखने का कोई मतलब नहीं। जैसे विवाह के भोज पर विलाप करना उपयुक्त नहीं है, वैसे ही **पुराने वस्त्र** को ठीक करने के लिए **कोरे कपड़े का पैबन्द** नहीं लगाया जाना था। दोनों का आपस में कोई मेल नहीं। ''कोरा कपड़ा'' वह भाग था, जिसे धोबी द्वारा अभी धोया नहीं गया हो। ''पैबन्द'' (*himation*) शब्द सामान्य अर्थ में ''कपड़े'' के लिए या अधिक विशेष अर्थ में बाहरी वस्त्र के लिए हो सकता है, जिसके फटने का डर हो (5:40 पर टिप्पणियां देखें)। यदि नये कपड़े का **पैबन्द** पुराने वस्त्र पर लगा दिया जाए, तो यह धोने पर सिकुड़ जाता है, जिससे पुराने कपड़ा खिंच और **फट** जाता है[6] जिससे यह पहले से भ बुरा लगता है।

जिस प्रकार कोरा कपड़ा पुराने वस्त्र के साथ लगता नहीं है, वैसे ही **नया दाखरस पुरानी मश्कों** में नहीं रखा जा सकता। पानी, दूध और दाखरस जैसी तरल वस्तुओं को ले जाने के लिए बर्तन बनाने में जानवरों की चमड़ी का इस्तेमाल किया जाता था। विलियम हैंड्रिक्सन ने इसका विवरण दिया है।

> मश्कें आमतौर पर बकरी या भेड़ की खाल की बनाई जाती थीं। जानवर से उतार लिए जाने के बाद इसकी रंगाई की जाती और इसे सीया जाता और खाल के पास से बाल काट लिए जाने के बाद उलटा कर दिया जाता। गर्दन को ''बोतल'' का मुंह बना लिया जाता। अन्य सुराखों को, पैरों और पूंछ के पास डोरियों से बांध दिया जाता।[27]

किसी खाल को दाखरस या मय रखने के लिए इस्तेमाल करने पर फर्मेंटेशन (खमीरन) की प्रक्रिया के दौरान यह फैल जाती। तौभी समय बीतने पर खाल सूखकर भुरभुरी हो जाती। यदि नया दखरस पुरानी मश्कों में डाला जाता तो खमीरन की प्रक्रिया से खाल फटने लगती जिससे नया दाखरस बेकार हो जाता। **नया दाखरस** केवल **नई मश्कों** में ही डाला जाता है।

यह सम्भव है कि इन दोनों उदाहरणों में बेमेलपन के नियम से आगे गहरा महत्व हो। दोनों उदाहरणें, ''दृष्टांत'' होने के कारण (लूका 5:36-38) पुराने और नये में अन्तर करती हैं: पुराना वस्त्र/नया पैबन्द और पुरानी मश्कें/नया दाखरस। शायद यीशु भी यही विचार दे रहा था कि यहूदी धर्म के पुराने रूप जिन्हें मनुष्य की परम्परा ने बिगाड़ दिया था, उनकी जगह मसीहियत की नई शिक्षाएं ले रही थीं। उपवास रखने का उनका प्रबन्ध, इन्हीं परम्पराओं का एक भाग था, पुराना वस्त्र था, जिसके लिए नया पैबन्द किसी काम का नहीं था और पुरानी मश्क भी जिसमें नया दाखरस फट जाना था। यीशु पुराने प्रबन्ध को ठीक करने के लिए नहीं, बल्कि पूरी तरह से कुछ नया देने के लिए आया। वह उनके घिसे-पिटे फॉर्मूलों में उन नई सच्चाइयों का पैबन्द नहीं

लगा सकता था जो वह लेकर आया था। यीशु ने फरीसियों को स्पष्ट कर दिया कि वह भ्रष्ट यहूदी मत को सुधारने के लिए नहीं बल्कि इसे बीच में से हटाने के लिए आया (देखें 5:17)। वह विश्वास करने, सोचने और जीने का एक नया ढंग लेकर आया। यहां मुख्य सबक यह था कि नया प्रबन्ध जिसे वह ला रहा था, उपवास रखने के मनुष्य के बनाए सांचे से मेल नहीं खाता था।

बेशक उपवास रखना पुराने प्रबन्ध का महत्वपूर्ण भाग था (6:16-18), पर बार-बार उपवास रखना विशुद्ध रूप से मनुष्य की खोज था। यीशु ने उपवास रखने को गलत नहीं कहा, पर जिस बात की उसने निन्दा की वह उनके उपवास रखने की परम्परा की पुरानी मश्क थी, जिसमें असली आज्ञा और उद्देश्य भुला दिए गए थे। वह अपने चेलों को उपवास रखने की फरीसियों की प्रथा को न मानने के लिए चौकस कर रहा था और इसकी आवश्यकता होने पर उन्हें उपवास के महत्व को समझा रहा था (देखें प्रेरितों 13:2, 3; 14:23; 2 कुरिन्थियों 6:5; 11:27)।

❖❖❖❖❖ **सबक** ❖❖❖❖❖

यीशु के निमन्त्रण की सूची (9:9-13)

समय-समय पर हम निमन्त्रण की सूचियां बनाते हैं। इनमें बच्चे के जन्म दिन की पार्टी, युवा दम्पत्ति के विवाह या बूढ़े दम्पत्ति की वर्षगांठ के मनाए जाने से सम्बन्धित निमन्त्रण हो सकते हैं। इसी तरह से यीशु ने स्वर्गीय भोज के लिए एक निमन्त्रण सूची बनाई है, जिसमें पापियों को बुलाया गया है (देखें 22:1-10)। उसने कहा, ''मैं धर्मियों को नहीं, परन्तु पापियों को बुलाने [निमन्त्रण देने]आया हूं'' (9:13)। जो लोग अपने आपको ''धर्मी'' मानते हैं उन्हें अपना पाप दिखाई नहीं देता। जिस कारण वे अपने आपको यीशु की पुकार से निकाल लेते हैं। इसके विपरीत जो लोग अपनी पापपूर्ण स्थिति से अवगत हैं, वे अनुग्रह की अपनी आवश्यकता को समझ सकते हैं।

डेविड स्टिवर्ट

आज उपवास रखना (9:14-17)

यूहन्ना के चेले इस तथ्य से परेशान थे कि यीशु के चेले लगातार उपवास नहीं रखते थे। यीशु ने समझाया कि उपवास रखना, जिसका सम्बन्ध शोक करने से था, उसके चेलों के लिए उपयुक्त नहीं था, क्योंकि वह उनके साथ था। उपवास करने, या शोक करने का समय आना था जब उससे क्रूस पर चढ़ाया जाना था। परन्तु इस शोक ने मसीह के जी उठने पर आनन्द से बिखर जाना था। आज हम एक जी उठे उद्धारकर्त्ता की सेवा करते हैं जिसे परमेश्वर के दाहिने हाथ ऊंचा किया गया! इसके अलावा उसने हमारे मनों में वास करने के लिए पवित्र आत्मा को भेजा है। हम मसीह की वापसी की राह देखते हैं, जब हमारी सब आशाएं और स्वप्न पूरे हो जाएंगे। नये नियम में चाहे लगातार उपवास रखने की बात नहीं कही गई, पर कभी-कभी उपवास रखना उपयुक्त है। आरम्भिक कलीसिया महत्वपूर्ण निर्णय लेने के समय उपवास रखती थी, जैसे मिशनरियों को बाहर भेजने या ऐल्डरों की नियुक्ति के समय (प्रेरितों 13:2, 3; 14:23)। कलीसिया के लिए आज जब महत्वपूर्ण निर्णय लेने या कठिन परिस्थितियां हो तो उपवास और

प्रार्थना लाभदायक हो सकते हैं।

डेविड स्टिवर्ट

प्रासंगिक सुसमाचार (9:14-17)

सुसमाचार को नये-नये तरीके से पेश करने या किसी ऐसी भाषा में बताने में कोई बुराई नहीं है जिससे लोग इसे समझ सकें। परन्तु किसी विशेष संस्कृति के लिए बाइबली भाषा और उदाहरणों के सम्बन्ध में हम किसी भी प्रकार से इसके संदेश में बदलाव न करें जिससे इसका अर्थ बदल जाए (यूहन्ना 12:48; 1 कुरिन्थियों 15:1-4; गलातियों 1:6-9; यहूदा 3)। सुसमाचार को मनुष्य की बनाई परम्पराओं के द्वारा फीका नहीं किया जाना चाहिए (15:1-9; कुलुस्सियों 2:8) या इसे अन्य धार्मिक प्रणालियों से मिलाया नहीं जाना चाहिए (कुलुस्सियों 2:20-22; 2 यूहन्ना 9-11)।

यीशु ने परम्पराओं को लागू करने पर विश्वास रखने के वास्तविक अर्थ या उद्देश्य को भूल जाने की निन्दा की। 9:15-17 में दिए तीन उदाहरणों से यीशु के चेलों को फरीसियों और यूहन्ना के चेलों द्वारा लगातार उपवास रखने की प्रथा को न मानने का आदेश दिया गया। बोल्स ने लिखा है कि यह ''सबक पर ज़ोर देने के लिए था कि उपवास का महत्व केवल तभी था जब मांग के अनुसार उपयुक्त अवसरों पर इसे रखा जाए।''[28]

कुछ लोग यह सिखाते हुए कि उदाहरणों में सुसमाचार को बदलने का संकेत है, इन वचनों को गलत पेश करते हैं। वास्तव में यह वचन उपवास रखने की फरीसियों की प्रथा का उदाहरण इस्तेमाल करते हुए बिल्कुल इसके उलट बताता है। पवित्र शास्त्र की व्याख्या अलग ढंग से करने के लिए परेशान लोग, चाहे इसका इनकार करते हों, पर यही कर रहे हैं।

टिप्पणियां

[1]विलियम बार्कले, *द मास्टर'स मैन* (नैशविल्ले: अबिंग्डन प्रैस, 1959), 58. [2]*डिक्शनरी ऑफ़ जीज़स एंड द गॉस्पल्स,* संपा. जोएल बी. ग्रीन एंड स्कॉट मैक्नाइट (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोइस: इंटरवर्सिटी प्रैस, 1992), 806 में थामस ई. श्मिट, ''टैक्सस।'' [3]मिशनाह *टोहोरोथ* 7.6; *हगिगाह* 3.6. [4]मिशनाह *बाबा कामा* 10.1. [5]टालमुड *सेन्हेद्रिन* 25बी। [6]आर. टी. फ्रांस, *द गॉस्पल अक्कॉर्डिंग टू मैथ्यू,* द टिंडेल न्यू टैस्टामैंट कमैंट्रीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1985), 166-67. [7]देखें लियोन मौरिस, *द गॉस्पल अक्कॉर्डिंग टू मैथ्यू,* पिल्लर कमैंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1992), 219. रोमी सरकार हेरोदेस अन्तिपास को गलील और पिरिया से कर इकट्ठे करके इस्तेमाल करने की अनुमति देती थी। (जोसेफस *एन्टिक्विटीस* 17.11.4.) [8]वही, 220. [9]*डिक्शनरी ऑफ़ जीज़स एंड द गॉस्पल्स,* संपा. जोएल बी. ग्रीन एंड स्कॉट मैक्नाइट (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोइस: इंटरवर्सिटी प्रैस, 1992), 757-60 में माइकल जे. विलकिन्स, ''सिन्नर।'' [10]उदाहरण के लिए देखें मिशनाह *देमाए,* 2.2, 3, जहां, ईमानदार और ''देश के लोगों'' में संगति पर चर्चा की गई है।

[11]क्रेग एस. कीनर, *ए कमैंट्री ऑन द गॉस्पल ऑफ़ मैथ्यू* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1999), 295. देखें मत्ती 9:13; 21:32; 26:45; लूका 5:8; 7:37; 13:1, 2; 24:7; यूहन्ना 9:31. [12]आरम्भिक कलीसिया में मेज़ की संगति एक बड़ा मुद्दा था, क्योंकि यहूदी लोग औपचारिक रूप में अन्यजातियों के साथ नहीं खाते थे (प्रेरितों 10:28; 11:2, 3; गलातियों 2:12, 13)। मसीह में अपनी एकता पाकर, विश्वासी मसीहियों को अलग-अलग जातीय पृष्ठभूमियों के बावजूद अपना भोजन बांटना आवश्यक था। परन्तु उन्हें किसी भाई के साथ, जो अनैतिक जीवन शैली जी रहा हो ''खाने की'' आज्ञा नहीं थी (1 कुरिन्थियों 5:11)। [13]डायोजीन्स

लेयरटियुस *लाइव्स ऑफ़ एमिनेंट फिलॉस्फर्स* 2.70; 6.1.6. [14]डियो क्रिसोस्टम *एट्थ डिस्कोर्स: ऑन वर्चु* 5. [15]सिसरो *टस्कुलन डिस्पुटेशंस* 3.3.5; डायोडोरस सिकुलुस 12.13.4. [16]एपिक्टेटुस *डिसकोर्सस* 2.14.21, 22; लाइवी 42.40.3. [17]लुसियन *डिमोनेक्स* 7. [18]जॉन फिलिप्स, *एक्पलोरिंग द गॉस्पल ऑफ़ मैथ्यू: एन एक्सपोज़िटरी कमैंट्री,* द जॉन फिलिप्स कमैंटी सीरीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: क्रेगल पब्लिकेशंस, 1999), 163. [19]जैक पी. लुईस, *द गॉस्पल अकॉर्डिंग टू मैथ्यू,* पार्ट 1, द लिविंग वर्ड कमैंट्री (आस्टिन, टैक्सस: स्वीट पब्लिशिंग कं., 1976), 135. [20]वही।

[21]जे. डब्ल्यू. मैक्गार्वे, *द न्यू टैस्टामैंट कमैंट्री,* अंक 1, *मैथ्यू एंड मार्क* (पृष्ठ नहीं, 1875; रिप्रिंट, डिलाइट, आरकैंसा: गॉस्पल लाइट पब्लिशिंग कं., तिथि नहीं), 83. [22]डग्लस आर. ए. हेयर, *मैथ्यू,* इंटरप्रिटेशन (लुइसविल्ले: जॉन नॉक्स प्रैस, 1993), 101. [23]रॉबर्ट एच. माउंस, *मैथ्यू,* न्यू इंटरनैशनल बिब्लिकल कमैंट्री (पीबॉडी, मैसाचुएट्स: हैंड्रिक्सन पब्लिशर्स, 1991), 85. [24]अपोक्रिफा अर्थात अप्रमाणिक पुस्तकों में, विपत्तियों ने विवाहों के सामान्य आनन्द को बड़े शोक और विलाप के समयों में बदल डाला (1 मक्काबियों 1:27, 39; 9:39-41)। [25]लुईस, 137. [26]राबर्ट एच. गुंड्री, *मैथ्यू: ए कमैंटरी आन हिज़ लिटरेरी एंड थियोलॉजिकल आर्ट* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1982), 169. [27]विलियम हैंड्रिक्सन, *न्यू टैस्टामेंट कमैंट्री: एक्सपोज़िशन ऑफ़ द गॉस्पल अकॉर्डिंग टू मैथ्यू* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1973), 428-29. [28]बोल्स, 210.